धर्म कसौटी

गुरु पुत्र गद्दी पर विराजमान थे, उनके सामने सुन्दर साथ बैठा हुआ था और हाथ जोड़े खड़ा एक गरीब साथ प्रार्थना करने लगा, 'महाराज सरदी का मौसम है दिन बहुत छोटा होता है–यहां से तीन-चार मील की दूरी पर रहता हूँ। दिन में दोनों समय आपके दर्शन करने के लिए आने जाने में पूरा दिन निकल जाता है और मैं अपने परिवार की जीविका उपार्जन के लिये कोई काम नहीं कर पाता इसलिए यदि आप कृपा दृष्टि करदें और मुझे एक समय की छूट दे दें तो मैं दिन में एकबार आपके दर्शन कर जाया करूं और बाकी समय में अपने परिवार के लिए रोटी-रोजी का प्रबन्ध कर सकूँ।' गरीब साथी की बात सुनते ही गुरु-पुत्र ने तुरन्त कहा–मालूम होता है तुम्हें मुझसे अधिक झूठी माया से प्यार है। तुम तो एक समय की छुट्टी मांगते हो मैंने तुम्हें दोनों समय के लिए छुट्टी दे दी–आज के बाद तुम दर्शन करने मत आना। हुकम सुनते ही वह गरीब साथी चरणों में गिर पड़ा और प्रार्थना करने लगा "महाराज मुझसे भूल हो गई जो मैंने एक समय की छूट माँगी, मैं दोनों समय आपके दर्शन करने आऊँगा मुझे अपने चरणों से जुदा न कीजिए–परन्तु गुरु पुत्र ने जो कह दिया वह अटल था और उसे कोई नहीं बदल सकता था। गरीब साथी ने बहुत प्रार्थना की–भूल की क्षमा मांगी, रोया, गिड़गिड़ाया, चरनों में पड़ा रहा लेकिन गुरु-पुत्र न माने बल्कि द्वारपाल को बुलाकर हुकम दे दिया कि कल से इस साथी को मन्दिर में मत आने देना।

गांव का भोला-भाला साथी उसकी आत्मा निर्मल थी, उसने सतगुरु महाराज जी के चरणों में बैठकर ब्रह्म ज्ञान सुना था, वृज और रास की लीलाओं का साक्षात्कार किया था, उसने प्रतिज्ञा कर ली कि वह न तो घर लौटकर जायगा और न ही जल ग्रहण करेगा जब तक कि गुरु-पुत्र उसे क्षमा नहीं कर देते। इस प्रकार वह गांव निवासी सात दिन तक बराबर भूखा प्यासा मन्दिर के बाहर पड़ा रहा लेकिन गुरु-पुत्र ने उस पर दया नहीं की। अब तो शरीर शिथिल पड़ गया–कमजोरी हो गई, उठना बैठना मुश्किल हो गया। उसकी बिगड़ती

Nijanand App

दशा को देखकर किसी ने आकर उससे कहा–इस प्रकार गुरु-पुत्र आपको क्षमा नहीं करेंगे–हां एक युक्ति है यदि तुम श्री मेहराज ठाकुर से कहो तो वह तुमको गुरु-पुत्र से क्षमा दिला देंगे क्योंकि सुन्दर साथ में प्रिय होने के कारण गुरु-पुत्र भी उनकी बात को मना नहीं करेंगे। सुझाव गरीब साथी के मन को भा गया और वह लकड़ी का सहारा ले कर श्री मेहराज ठाकुर के घर को चल दिया।

साथी जब मेहराज ठाकुर के घर पहुँचा तो वह घर पर नहीं थे राज दरबार गए हुए। उसने अपनी सारी दुःख भरी गाथा श्री मेहराज ठाकुर की धर्म पत्नी श्रीमती फूलबाई जी से कह सुनाई। फूलबाई जी ने गांव के उस भोले-भाले सुन्दर साथी को सान्त्वना दी और धीरज बँधाया कि आप चिन्ता न करें सब ठीक हो जायगा। वह (श्री महाराज ठाकुर) जब शाम को आवेंगे तो गुरु-पुत्र से कहकर आपको क्षमा दिला देंगे—आप तो परम धाम की आत्मा हो आप भला सुन्दर साथ से कैसे दूर हो सकते हो—उठिए - हाथ मुह धोकर अन्न-जल ग्रहण करें। फूलबाई के आश्वासन से उस गरीब साथी के दिल को शान्ती मिली और उसने प्रसाद लेकर खाना खाया।

उधर गुरु-पुत्र को जैसे ही पता चला कि मेहराज ठाकुर की पत्नी ने उस साथी को शरण में लेकर प्रसाद दे दिया है जिसको मैंने धर्म से निकाल दिया था तो गुरु-पुत्र को बहुत बुरा लगा और उन्होंने फौरन द्वारपाल को बुलाकर हुकम दिया कि बिना मेरी आज्ञा के श्री मेहराज ठाकुर को मन्दिर में प्रवेश न करने देना।

श्री मेहराज ठाकुर रियासत जामनगर में वजीर (मंत्री) थे। रियासत के जाम साहब उनसे बहुत खुश थे। उन्होंने रियासत का पूरा कार्य-भार श्री मेहराज ठाकुर को सौंप रखा था क्योंकि अपनी योग्यता और सूझबूझ से राज्य का संचालन इस प्रकार से कर रखा था कि राज्य की जनता बहुत खुश थी, किसी प्रकार का वैर विरोध नहीं था। जनता की भलाई के लिए अनेक योजनायें चला रखी थीं और मेहराज ठाकुर पूरी लगन एवं दक्षता से उसका संचालन कर रहे थे।

एक रात ध्यान अवस्था में श्री मेहराज ठाकुर ने देखा कि सतगुरु महाराज जी सामने हैं और कह रहे हैं "मेहराज ठाकुर भूल गए सब कुछ—मैंने धाम चलते समय सुन्दर साथ की बाहें तुम्हारे हाथ में सौंपी थी और कहा था कि धर्म की जागनी का सब कार्य तुम्हारे हाथों ही होना है पर तुम एक छोटी सी रियासत ही में मस्त हो गये,

Nijanand App

चरनामृत-प्रसाद दिया है। यह मेरी आज्ञा का उल्लंघन है जो किसी भी तरह क्षमा नहीं किया जा सकता। यद्यपि मेहराज ठाकुर यह एक पक्षीय आदेश सुनकर स्तब्ध रह गए परन्तु इतना ही कहा कि वह तो सीधा दरबार से चले आ रहे हैं। घर जाकर और पत्नी से पूछ कर ही बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हुआ? परन्तु गुरु-पुत्र बोले कि तुम्हारी पत्नी ने इतना बड़ा गुनाह किया है जिसके लिए अब कहने सुनने की कोई बात नहीं—हां, तुम यह फैसला कर लो कि तुम्हें सुन्दर साथ में रहना है या अपनी पत्नी के साथ रहना है-यदि सुन्दर साथ में रहना है तो तुम्हें अपनी पत्नी का त्याग करना होगा अन्यथा तुम्हें भी सुन्दर साथ से निकाल दिया जायेगा, यह हमारा आखिरी फैसला है। गुरु—पुत्र का निर्णय सुनते ही मन्दिर में सन्नाटा छा गया और बैठे हुए लोग स्तब्ध रह गए परन्तु श्री मेहराज ठाकुर बड़ी शान्त मुद्रा में खड़े रहे और उन्होंने सतगुरु महाराज जी के चरनों का ध्यान किया तो उनके सामने रात्रि वाला दृश्य आ गया जैसे सतगुरु जी कह रहे हों 'मेहराज ठाकुर यह तुम्हारी परीक्षा है तुमको धर्म की कसौटी पर परखा जा रहा है।' गुरु—पुत्र के हुकम को श्री राज जी महाराज का हुकम जानकर मेहराज ठाकुर ने गुरु-पुत्र से कहा कि सुन्दर साथ के चरण नहीं छोड़ सकता—अपनी पत्नी का त्याग कर सकता हूँ। उत्तर सुनकर गुरु-पुत्र प्रसन्न मुद्रा में बोले, 'मेहराज ठाकुर शाबाश, तुमने सूझ-बूझ से काम लिया है और ठीक फैसला किया है।

जब इस निर्णय की सूचना श्रीमती फूलबाई को मिली तो वह एकदम व्याकुल हो उठीं—आंखों से आंसू झरने लगे। वह सोचने लगीं कि मैंने कौन सी ऐसी महान भूल की है जिसकी इतनी बड़ी सजा दी जा रही है मैंने घर आए हुए अतिथि का सत्कार किया है जो कि भारतवर्ष की परम्परा है। मैंने तो एक निर्मल आत्मा को श्री राज जी महाराज का प्रसाद ही तो दिया था कोई पाप तो नहीं किया, आंखों से आँसू बहते रहे, मन व्याकुलता के ताने—बाने में ठण्डी आहें भरता रहा। सारी रात सिसकियां लेते बीत गई पता नहीं कब फूलबाई जी की आत्मा परमधाम में अपनी परआत्म में पहुँचकर श्री राज जी महाराज से बातें करती रही, मानों उन्हें कोई संकेत मिल गया हो—कोई आदेश मिल गया हो त्याग और बलिदान का। अपने प्राणपति को केवल अपने स्वार्थ के लिए वह समाज से विमुख कर द यह स्वार्थ उन्हें बहुत तुच्छ जान पड़ा, उन्हें महसूस हुआ कि ब्रह्म अगनाओं की जागनी के लिए आवश्यकता है धाम के धनी का उनके प्राणप्रिय की जिसके लिए उन्हें बलिदान

Nijanand App

देना ही होगा क्योंकि प्रात: जब वह उठीं तो उनका मन बहुत हल्का हो चुका था, चेहरा शान्त था और किसी प्रकार की बेचैनी नहीं थी। स्नान इत्यादि से निवृत होकर श्री राज जी महाराज जी के चरणों का ध्यान किया और फिर कुछ लिखने बैठ गई।

'प्रीतम मेरे प्राण के आत्मा के आधार।
सब सुख देने योग्य हो लीला नित्य विहार॥"

मेरे प्राणों के नाथ—मेरे स्वामी आपके चरणों में फूलबाई का प्रणाम स्वीकार हो। मुझे यह सूचना मिल गई है कि आपने गुरु-पुत्र की आज्ञा मान कर मुझे त्याग दिया है, यह आपने अच्छा ही किया क्योंकि मैं यह कभी भी सहन नहीं कर सकती कि आप मेरी खातिर धर्म परीक्षा में असफल हों, मेरा आपका सम्बन्ध तो अटूट है मेरी और आपकी आत्मा एक ही निजघर की है। इस दुनियाँ में लोगों को केवल एक सुख प्राप्त होता है आत्मिक या शारीरिक परन्तु मैं ऐसी भाग्यशाली हूँ जिसको ये दोनों सुख प्राप्त हुए। आत्मा तो हमारी एक घर की है ही शरीर से भी आप मेरे पति हैं। विवाह के समय लग्न मण्डप पर फेरे लेने के साथ यह शरीर आपको सौंप दिया था और इसके आप मालिक हो गए थे, आज जब आपने इस शरीर को त्याग दिया है तो मैं भी इस शरीर को रख कर क्या करूँगी। अब मुझे इस शरीर से घृणा होने लगी है इसलिए स्वामी मैं इस शरीर को छोड़ने जा रही हूँ। मैं भारत भूमि पर जन्मी एक पतिव्रता नारी हूँ, क्षत्रिय घराने की बहू होने के नाते मैं यह प्रतिज्ञा करती हूँ कि जब तक मेरी आत्मा इस शरीर से अलग नहीं हो जाती इस शरीर को अन्न, जल कुछ नहीं दूँगी। शरीर छूटने के बाद भी शायद गुरु-पुत्र आपको आज्ञा नहीं देंगे कि मेरा शरीर आपकी चरण रज ले सके इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि जहां पर मेरी चिता जलाई जाय उस राख पर एक बार आकर आप अपने चरण कमल रख देना। मेरी गल्तियों को नादान समझ कर क्षमा कर दीजियेगा।

आपकी अपनी
फूलबाई

इस प्रकार फूलबाई जी उस पतिव्रता नारी ने वह पत्र एक लिफाफे में बन्द कर अपने प्राणों के प्रीतम श्री मेहराज ठाकुर को भेज दिया।

और फूलबाई जी ने जैसी प्रतिज्ञा की थी उसी के अनुसार अन्न जल त्याग दिया, श्री राज जी महाराज के ध्यान में समाधी लगा दी, मिनटों से घन्टे, घण्टों से दिन, दिनों से हफ्ते गुजरते चले गए और वह बड़ी शान्त मुद्रा में समाधी अवस्था में

Nijanand App

बैठी रहीं। फिर एक काली रात बिजली की चमक और बादलों की गड़गड़ाहट में एक भयानक तूफान आया—कुछ बाकी न बचा-तूफान चलता रहा, रात रेंगती रही, दिया टिमटिमाता रहा, अचानक दिये की लौ बुझ गयी। रात का अन्धेरा कहीं दूर चला गया, सवेरा हुआ तो देखा रात के तूफान से प्रकृति का सब कुछ लूट चुका था, पेड़ों से पत्ते गिर गए थे। पौधों से कलियां टूट गयीं-दूर पक्षी का घरौंदा गिर पड़ा था और उधर फूलबाई जी ने भी अपना शरीर त्याग दिया और परातम में लीन हो गयीं। इस प्रकार एक पतिव्रता नारी ने अपना व्रत पूरा किया और श्री मेहराज ठाकुर धर्म की कसौटी पर कुन्दन बन कर चमके।

सुन्दर साथ जी यह घटना मैंने श्री "बीतक साहब" से ली है। हां-भाव मेरे अपने है, इसमें जो भी त्रुटियां हों उनको आप सुधार लेना और मुझे नादान समझ कर क्षमा कर देना।

चरण रज

चमनलाल सलूजा

भजन

ओ अर्श वाले अब हमको बुला ले,
तेरे खेल से अब जी भर गया है। —सुरेन्द्र 'बब्बू'
थी गल्ती हमारी जो जिद की थी तुमसे,
ना अपनी रूहों को इतनी सजा दे।। ओ अर्श.....

ना जाना था दुनियां में फँस जायेंगे हम,
माया के दल-दल में धंस जायेंगे हम।
माया के दल—दल से हमको बचाले,
ना अपनी रूहों को इतनी सजा दे।। ओ अर्श.....

इस वाणी का जाना इशारा है तेरा,
बहुत जल्द होगा पिया मिलन तुमसे मेरा।
वाणी का रस अब तो हमको पिला दे,
ना अपनी रूहों को इतनी सजा दे।। ओ अर्श.....

तेरे बिना पिया अब नहीं कोई मेरा,
पिया तेरा दामन अब घर है मेरा।
अपने दामन में अब हमको पनहा दे,
ना अपनी रूहों को इतनी सजा दे।। ओ अर्श.....

Nijanand App